अलीपुर गांव में शिक्षा: कक्षा में शिक्षण

❑ पद्मा एम. सारंगपाणि

अनुवाद : देवयानी

इस लेख माला के अन्तर्गत अभी तक आप अलीपुर गांव के स्कूल, शिक्षक, बच्चों, और स्थानीय समुदाय के पारस्परिक रिश्तों का बारीक विश्लेषण पढ़ चुके हैं । स्कूल में कैसी शिक्षा दी जा रही है, क्या मूल्य-संरचना काम आ रही है और शिक्षक बच्चों के संबंध की विषमता का सामाजिक आधार क्या है - ऐसे प्रश्न पिछले लेखों की मूल अन्तर्वस्तु रहे । प्रस्तुत लेख कक्षा में होने वाली शिक्षण-प्रक्रिया का सूक्ष्म विश्लेषण कर उसमें अन्तर्निहित कमजोरियों को उद्घाटित करता है । हम देख सकते हैं कि कक्षा-शिक्षण में यहां बच्चों की भूमिका लगभग नगण्य है ।

पिछले लेख में हमने देखा कि कैसे शिक्षक अपनी सत्ता स्थापित करता है और कैसे यह सत्ता शिक्षक और विद्यार्थी के व्यक्तित्व और दोनों के पारस्परिक संबंधों के लिए अपरिहार्य है। यह सत्ता विद्यार्थी के आचरण को नियंत्रित करने वाली एक नैतिक तथा नियामक सत्ता के रूप में कायम की जाती है । इसी के समानान्तर यह एक शिक्षा शास्त्रीय सत्ता भी है जो ज्ञान को भी नियंत्रित और नियमित करती है । अलीपुर में शिक्षा के बारे में इस तीसरे लेख में मैं कक्षा में शिक्षा के नियंत्रण का विश्लेषण और प्रस्तुतिकरण करूंगी। मैं इसकी शुरुआत चार विभिन्न शिक्षण पद्धतियों का प्रतिनिधित्व करने वाले उदाहरणों से करूंगी ।

उदाहरण 1

आशा भाषा की पुस्तक से 'कबड्डी' अध्याय को लगभग समाप्त करने वाली है । वह एक सपाट आवाज में पाठ को पढ़ रही है । बीच-बीच में वह नजर उठाने और प्रश्न करने के लिए थोडा सा ठहरती है । वह जवाब आने की प्रतीक्षा किए बिना उसी सवाल के जवाब के रूप में अध्याय की कुछ पंक्तियां दोहराने लगती है । पूरी कक्षा बिल्कुल शांत बैठी है और किताब में अंगुली रख कर साथ साथ पढ रही है । कभी कभार वे दोहराए जाने वाले वाक्य के अंतिम शब्दों को फुसफुसा देते हैं। इन सबसे अलग सूर्य प्रकाश कभी छत को ताकता है तो कभी खिड़की से बाहर झांकने लगता है । अनुत्तीर्ण रहने वाले बच्चे एक तरफ चुपचाप कुछ लिखित कार्य कर रहे हैं ।

साल के इन्हीं दिनों में अक्सर स्कूल में बच्चे आधे दिन की छुट्टी के समय अक्सर कबड्डी खेला करते हैं । आशा इस तथ्य का का कहीं उल्लेख नही करती कि बच्चे कबड्डी खेलते हैं और न बच्चे ही इस बात का कोई संकेत देते हैं कि वे इस खेल से परिचित हैं । आशा विश्लेषण भी करती है तो उन्हीं पक्तियों को और धीमी गति से दोहराती भर है, जिन्हें कि पहले ही पढ़ा जा चुका है । इससे ऐसा लगता है कि शब्दों को श्रोता के दिमाग में बिठा दिया जाए तो अर्थ वे स्वत: समझ लेंगे । प्रश्न पूछना भी यहां एक रुटीन मात्र है । ऐसा लगता है कि उसे किसी से जवाब मिलने की उम्मीद भी नहीं है क्योंकि न तो वह किसी तरफ से जबाव आने के लिए इंतजार करती है और न उन बच्चों का पता लगाने की ही कोशिश करती है जो जवाब देने में सक्षम हों । अधिकांश बच्चे भी जवाब देने का कोई प्रयास नहीं करते, निसंदेह इसका कारण गलत होने का भय है। कभी कभार कक्षा के मोनिटर और सेंकड मोनिटर जोगी या सतीश बहुत कोमल तथा आज्ञाकारी स्वर से ही जवाब देते हैं लेकिन इन बातों को भी पूर्णत: नजरअंदाज कर दिया जाता है ।

उदाहरण 2

'बल, कार्य, ऊर्जा,' (कक्षा 5 विज्ञान) अध्याय का पहला पैराग्राफ पढ़ा जा चुका हैं

कृष्णा कुमारी - प्रतिदिन हम काम करते हैं ? ''

कक्षा : ''हां जी '' ।

- ''हमें वस्तुओं को गतिशील बनाना होता है - जैसे सायकल।''
- ''हां जी ।''
- ''इसके लिए हमें किसकी जरुरत पड़ती है?''
- ''ऊर्जा की ।''
- ''कठिन काम के लिए हमें ज्यादा बल की जरुरत पड़ती है ?''
- ''हां जी ।''

''और हल्के काम के लिए कम बल की ?''

- ''हां जी ।''

- ''कठिन काम को आसान करने के लिए हम मशीन काम में लेते हैं ?''

- ''हां जी ।''

इसके बाद वह पाठ में से मशीन की परिभाषा पढ़ने लगती है।

कृष्णा कुमारी भी सारा ध्यान अध्याय पर ही केंद्रित रखती हैं। वे समझाने के लिए अध्याय को छोटे-छोटे प्रश्नों में तोड़ देती है जिनके जवाब बहुत आसान हैं और सब का जवाब एक ही शब्द हां या नहीं में दिया जा सकता है ।

उदाहरण 3

नागपाल विभिन्न किस्म की मिट्टियों के बीच अंतर समझाने के लिए पाठ्यपुस्तक में दिए गए एक प्रयोग का प्रदर्शन कर रहे हैं जिसके लिए साधारण बगीचे की मिट्टी को गिलास भर पानी में मिला कर पानी में उसकी परतें बनने की प्रतीक्षा की जा रही है। मिट्टी के निथरने की प्रतीक्षा करने के दौरान वे बच्चों को यह बताने लगते हैं कि किस प्रकार चट्टानों के अपक्षय से मिट्टी बनती है । यह जानकारी पाठ्यपुस्तक में नहीं दी गई है ।

दिनेश बीच में ही एक रेल दुर्घटना के बारे में बताने लगता है जिसमें दो रेलें आपस में टकरा गई थीं । नागपाल उसे डांटते नहीं हैं । वे उसे नजरअंदाज करते हुए अपनी आवाज ऊंची कर, यह बताना जारी रहते हैं कि कैसे पानी बर्फ के रूप में चट्टानों की दरारों तक पहुंच जाता हैं जिसके कारण चट्टानें टूट जाती हैं । आगे वे यह भी बताते हैं कैसे चट्टानें गिरते हुए टूटती जाती हैं और अंतत: मिट्टी बन जाती है । इसके बाद वे शुरू किए गए दोनों प्रयोगों पर लौटते हैं और बताते हैं कि चिकनी मिट्टी पानी पीती है जिसे बच्चे दोहराते हैं ।

- चिकनी मिट्टी पानी पीती है ।

कुछ बच्चे आगे जोड़ते हैं और यह चिकनी हो जाती है, ... ''हां जी यह चिकनी हो जाती है, और जी अगर आप इस पर चलोगे तो फिसल जाओगे ।''

इसे भी नजरअंदाज कर दिया जाता है । नागपाल गिलास की तरफ इशारा करते हुए पूछते हैं - ''कौन से कण पानी को गंदला कर देते हैं ?''

बच्चे एक स्वर में ''चिकनी मिट्टी के ।''

नागपाल आगे बताते हैं कि कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाने के बाद उन्हें छाया में सुखाता है । सुलेमान चिल्लाता है, ''जिससे वे सटक जाएंगे ।''

नागपाल के पढ़ाने के तरीके में वे जानकारियां भी शामिल रहती हैं जो पाठ्यपुस्तक में नहीं दी गई हैं । ग्रामीण जीवन तथा अन्य स्त्रोतों से प्राप्त जानकारियां भी कक्षा में शामिल हो जाती हैं। बच्चों को भी पाठ से संबंद्ध या असंबद्ध बातें पाठ में जोड़ते हुए सुना जा सकता है।

उदाहरण 4

सामाजिक ज्ञान की पुस्तक से अध्याय 'मानवता के पुजारी' पढ़ाया जा रहा है । भारद्वाज गांधी के बारे में एक पैराग्राफ पढ़ते हैं और

भारद्वाज : ''क्या तुम लोगों ने अंग्रेजों को देखा है ।''

अशोक और अजय : ''हां, हां ।''

भारद्वाज : ''वे कैसे दिखते हैं ?''

अजय : ''गोरे-गोरे ।''

अशोक : ''बहुत ज्यादा गोरे-गोरे ।''

अजय : ''मैंने उन्हें लाल किले पर देखा था ।''

अशोक : ''वे छोटा सा यहां तक ऊंचा (अपनी जांघों पर हाथ रखते हुए) कच्छा पहनते थे । वे हाथ में चिड़ी छक्का लिए हुए थे और हाथ हिला कर टा टा कर रहे थे।

अजय: ''मैने उन्हें देखा, उन्होंने मेरा और जोनी का फोटी भी खींचा ।''

मनोज : ''वे लोग लुटेरे होते हैं ।''

भारद्वाज :''नहीं वे सिर्फ यहां से कच्चा माल ले जाते थे ।'' इसके बाद वे बताते हैं कि कैसे स्वाधीनता प्राप्ति के समय तक भारत सुई का भी उत्पादन करने में असमर्थ था ।

अजय : ''क्या जो लोग ऊन और कपास का उत्पादन करते थे अंग्रेज उन्हें पैसा देते थे ?''

कोई जवाब नहीं ।

भारद्वाज पुराने दिनों के बारे में बताने लगते हैं कि तब किस चीज की क्या कीमत होती थी । वे पुरानी इकाइयों का इस्तेमाल करते हैं ।

मनोज : ''सेर क्या होता है जी ?''

इसे भी नजरअंदाज कर दिया जाता है। भारद्वाज जागीरी के बारे में बताने लगते हैं ।

मनोज : ''जागीरी का एक मण कितना होता था ?''

सुनील : ''मनोज पूछ रहा है कि जागीरों का एक मण कितना होता है ?''

अजय : ''एक मण में पांच किलो होते थे । पांच पैसे में तो खूब सारी टाफियां आ जाती थीं ।''

पंकज : ''वे गोल गोल होती थीं ।''

मनोज : ''वे पीतल से ढले होते थे ।''

अजय : ''तब लड़ाई क्यों नही हुई ?''

भारद्वाज उन्हें दांडी मार्च के बारे में बताते हैं और बच्चों को गांधी की तस्वीर दिखाने के लिए पुस्तक खोलते हैं । तभी आधी छुट्टी के लिए घंटी बज जाती है ।

यह उदाहरण भारद्वाज की पढ़ाने की विशिष्ट शैली का है जो सर्वाधिक गैर पाठ्यपुस्तक आधारित है । वे अक्सर बहुत दूर चले जाते हैं। बच्चों को कहावतें कहानियां और तमाम ऐसी जानकारियां देने लगते हैं जो पाठ्यक्रम से नाम मात्र को ही संबंद्ध होती है । उनके पढ़ाने के दौरान बच्चों की आवाज काफी सुनी जा सकती है।

तीसरे और चौथे उदाहरण की कक्षाएं पहले और दूसरे से काफी भिन्न हैं । यहां बच्चों को तत्काल और जोर शोर से अपनी जानकारियों तथा स्थानीय अनुभवों को बांटते हुए सुना जा सकता है । अक्सर इन जानकारियों का कोई सीधा संबंध दिखाई नहीं देता। यदि एक शब्द का भी उल्लेख किया जाता है, बच्चे उस से जुड़ी बातें बताने लगते, यहां तक कि वह जानकारी प्रासंगिक है या नहीं इसके सोचने के लिए भी वे रुकना नहीं चाहते । लेकिन वे पाठ पर ध्यान भी दे रहे होते हैं और उससे जुड़े प्रश्न भी पूछते हैं । चारों कक्षाएं शिक्षा शास्त्रीय संबंध के लिहाज से एक दूसरे से पर्याप्त भिन्न हैं । पाठ्यक्रम संपादित कराने के परिप्रेक्ष्य में इन चार कक्षाओं की गतिविधियों को समझने में 'प्रारूप बनाने' के विचार से मदद मिल सकती है ।

ज्ञान का वर्गीकरण तथा प्रारूप बनाना

बेसिट बर्न्सटीन ने तीन सूत्री व्यवस्था पाठ्यक्रम, शिक्षा शास्त्र और मूल्यांकन, जो कि शैक्षिक ज्ञान का अभीष्ट है, के अन्तरनिहित ढांचे का विश्लेषण करने के लिए वर्गीकरण तथा प्रारूपण की अवधारणा प्रस्तुत की । शिक्षा में नियंत्रण और संप्रभुता पाठ्यक्रम में किन चीजों को शामिल किया जाता है या शिक्षा शास्त्रीय संबंधों से किन्हें बाहर रखा जाता है, इसके चयन से ही प्रकट हो जाता है। सीमा की सत्ता (बाउन्ड्री स्टेंग्थ) का विचार वर्गीकरण व प्रारूपण के विचार में अन्तरनिहित है । वर्गीकरण का अभिप्राय पाठ्यक्रम की सामग्री के बीच किये गये विभेद की प्रकृति से है । जब वर्गीकरण सुदृढ़ होता है तब पाठ्यसामग्री एक दूसरी से पर्याप्त अलग अलग होगी जिनके बीच स्पष्ट सीमा रेखा खींची जा सकती हो । ठेठ भारतीय विषय आधारित स्कूली पाठ्यक्रम ऐसे ही सुदृढ़ वर्गीकरण का उदाहरण हैं। प्रत्येक विषय अपनी सीमाओं में इतनी मजबूती से बंधा होता है कि एक की विषय वस्तु को दूसरे से जोड़ पाने की संभावना बहुत कम रह जाती है। इसके विपरीत कोई संघटित पाठ्यक्रम कमजोर वर्गीकरण का उदाहरण होगा ।

प्रारूपण की अवधारणा का संबंध शिक्षण-शास्त्र से है । इसका अभिप्राय इस सन्दर्भ के रूप में है जिसमें ज्ञान दिया और लिया जाता है, और शिक्षक तथा छात्र के बीच विशिष्ट संबंध कायम होता है । इसका शिक्षण-शास्त्र की विषयवस्तु से कोई लेना देना नहीं है बल्कि शिक्षण-शास्त्रीय संबंधों के तहत, क्या हस्तांतरित किया जाए और क्या नहीं इसकी सीमाओं से है । इसका संबंध जो ज्ञान हस्तान्तरित किया गया है और शिक्षण-शास्त्रीय संबंध के तहत जिसे ग्रहण किया गया है उस पर छात्र तथा शिक्षक के नियंत्रण के चरम से है । सुदृढ प्रारूप का अर्थ है जिसमें विकल्पों की गुंजाइश कम हो जबकि कमजोर प्रारूप में विकल्पों की गुंजाइश ज्यादा होती है । ''इस प्रारूप का अर्थ नियंत्रण की उस सीमा से है जिसका दावा शिक्षक और छात्र शिक्षाशास्त्रीय संबंधों के तहत और लिए जाने वाले ज्ञान के चयन, संगठन और उसकी गति के संदर्भ में करते हैं।'' क्या सिखाया जा सकता है और क्या नहीं के संबंध में सीमा-रेखा संबंधों (बाउन्ड्री रिलेशनशिप) का एक और पहलू भी है यह पहलू शिक्षक एवं विद्यार्थी के गैर-स्कूली सामुदायिक-ज्ञान एवं उस शैक्षिक ज्ञान के बीच संबंध का है जो शैक्षणिक संबंधों के तहत सिखाया जाता है । * एक सशक्त ढांचा गैर-स्कूली सामुदायिक-ज्ञान एवं शैक्षिक ज्ञान के सम्मिश्रण का विरोध करेगा । जबकि एक लचीले ढांचे के अनुसार गैर-स्कूली स्थानीय ज्ञान भी कक्षा में चलने वाले विमर्श का हिस्सा हो सकता है ।

अलीपुर स्कूल के पाठ्यक्रम में प्रारूपण

हम पहले ही देख आए हैं कि शिक्षक छात्र संबंध की चारित्रिकता शिक्षक की छात्र पर संप्रभुता पर निर्भर करती है । यह संप्रभुता केवल नैतिक ही नहीं, ज्ञान-मीमांसात्मक भी होती है । इसलिए हम यह मानकर चलते हैं कि अलीपुर की कक्षाओं का संचालन बहुत सुदृढ़ ढांचे (प्रारूप) के आधार पर होता होगा । अब तक हमने जो चार उदाहरण देखे, चारों शिक्षकों के पढ़ाने के तरीके में पर्याप्त भिन्नता है और बच्चों की भागीदारी भी वहां अलग-अलग अनुपात में है । उदाहरण एक में बताई गई आशा की कक्षा सुदृढ प्रारूप का सटीक उदाहरण है । यहां पाठ के दौरान बच्चों की भागीदारी ही पूर्णत: नदारद नही है बल्कि उसका अपना पढ़ाने का

* बासिल बर्न्सटीन (1971) 'आन द क्लासीफिकेशन एण्ड फ्रेमिंग ऑफ नॉलेज' पृष्ठ 49

तरीका भी सपाट आवाज में बहुत सख्ती से स्वयं को पाठ्यक्रम तक सीमित रखे हुए है । उदाहरण दो की कृष्णा कुमारी की कक्षा भी सुदृढ प्रारुप का ही उदाहरण है जिसमें वह पाठ्यक्रम के इर्दगिर्द ही सीमित है। यहां तक कि जब कभी वह प्रश्न भी पूछती है तो केवल उन्हीं जवाबों पर ध्यान देती है जो पूर्णत: पाठ्यक्रम पर आधारित हैं ।

कृष्णा कुमारी : ''शाकाहारी कौन होते हैं?''

कई बच्चे : ''जो मीट नही खाते ।''

इस उत्तर पर ध्यान दिए बिना वह बताती है -

''वे लोग जो चावल, रोटी, फल ..... खाते हैं।''

इन दोनों उदाहरणों में शैक्षिक हस्तान्तरण की प्रक्रिया में क्या शामिल हो और क्या नहीं, इस पर छात्रों का कोई नियंत्रण नहीं हो सकता । यहां तक की अध्यापिकाओं का भी वहां कोई प्रभावी नियंत्रण दिखाई नहीं देता बल्कि वे स्वयं ही पाठ्यपुस्तक में दी गई जानकारी के चयन और संघटन से संचालित दिखाई देती हैं । यह दोनों उदाहरण कृष्ण कुमार की 'पाठ्यपुस्तक संस्कृति' के नमूने हैं जो अधिकांश भारतीय स्कूलों की चारित्रिकता को रेखांकित करते हैं ।

इनकी तुलना में नागपाल और भारद्वाज की कक्षाएं कमजोर प्रारूप के उदाहरण सी दिखाई देती हैं, जबकि ऐसा नहीं है । इन दोनों कक्षाओं में भी अध्यापक पर प्रारूप का अत्यधिक नियंत्रण है और इस प्रारूप की सीमा छात्रों के लिए बिल्कुल स्पष्ट है जबकि अध्यापक उससे छूट ले लेते हैं । उदाहरण तीन की नागपाल की कक्षा में बच्चों की भागीदारी चाहे वह सामयिक हो या नहीं, उस पर न ध्यान दिया जाता है और न टिप्पणी ही की जाती है । उनकी उपेक्षा कर दी जाती है और इस प्रकार कक्षा में चल रहे विमर्श में वस्तुत: उनकी कोई भागीदारी नहीं हो पाती है। दूसरी तरफ शिक्षक बच्चों को जानना चाहिए इसलिए पाठ्यक्रम से बाहर की भी बहुत सारी जानकारियां शामिल करते जाते हैं । यह शिक्षा शास्त्रीय चालाकी के द्वारा संभव होता है जिसे मैं 'मास्टरी' कहूंगी और जिसके बारे में चर्चा आगे की जाएगी । एक बार तो जब एक बच्चे ने अध्यापक की पाठयपुस्तक से बाहर की जानकारियों के साथ अपना अवलोकन जोड़ा तो नागपाल ने उसे चपत भी लगा दी । दूसरे बच्चे ने बाद में मुझसे कहा 'गुरुजी' को उसे चपत लगानी ही चाहिए थी, वह तो ऐसे जताता है जैसे वह सब कुछ जानता है । इस तरह नागपाल ने यह स्पष्ट कर दिया कि केवल वह कक्षा में जानकारियां देने का एक मात्र स्रोत है और शैक्षिक विमर्श में बच्चों की भागीदारी का प्रयास असह्य है ।

शिक्षक की ज्ञान मीमांसात्मक संप्रभुता को स्थापित करने के लिए यह अपेक्षाकृत कम उपयोग में लाई जाने वाली प्रवृति है । अधिकांशत: तो सुदृढ़ प्रारूप से इस अपेक्षाकृत कमजोर दिखने वाले ढांचे में ज्ञानमीमांसात्मक नियंत्रण के लिए और अधिक चालाकी से काम लिया जाता है ।

प्रारूप की सीमाओं को बनाए रखने की तकनीक

1. मास्टरी

अलीपुर में अध्यापकों का पढ़ाने का तरीका अलग अलग है। लेकिन वे सभी, जब कक्षा में पढ़ाना शुरु करते हैं, तब अध्यापक की भूमिका का निर्वाह करते प्रतीत होते हैं । मैं इसे 'मास्टरी' की भूमिका कहूंगी । मास्टरी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रतीक आवाज तथा नजर हैं । जो आवाज काम में ली जाती है वह किसी उद्घोषणा की तरह होती है जैसे बस स्टैण्ड या रेल्वे स्टेशन पर की जाने वाली उद्घोषणा या फिर सार्वजनिक उद्घोषणा की कोई अन्य व्यवस्था। इस तरह की आवाज अध्यापक कोई घोषणा करने, सूचना देने, समझाने, प्रश्न पूछने या पाठ्यपुस्तक में से पढ़ने के समय काम में लेते हैं । इस दौरान स्वर सपाट रखा जाता है और उसमें किसी प्रकार के उतार चढ़ाव या संवेदना के सम्मिश्रण से बचा जाता है । शब्द

बहुत सोच समझ कर और धीरे धीरे बोले जाते हैं । वाक्य के अंत में स्वर ऊंचा हो जाता है जबकि अंतिम से पहला शब्द बोला जा रहा होता है और उसके बाद अंतिम शब्द फिर बहुत धीमी आवाज में उच्चारा जाता है ।

इस तरह यह जताया जाता है कि जो कुछ भी संप्रेषित किया जा रहा है वह महत्वपूर्ण है और उसके द्वारा जरूरी जानकारी दी जा रही है ।

मास्टरी का दूसरा प्रमुख लक्षण अध्यापक की नजर होती है। पिछले अध्याय में भी इसकी चर्चा शिक्षक की बच्चे पर सत्ता स्थापित करने वाले उपकरण के रूप में की जा चुकी है । अध्यापक अपने छात्रों की तरफ देखते समय पूर्णत: भावहीन दिखाई देते हैं और वे अपनी पलक को भी झपकाए बिना सख्त निगााह से बच्चों को देखते हैं । वे एक के बाद एक बच्चे पर धीरे-धीरे नजर डालते हैं। इसका अंतिम लक्ष्य यही प्रतीत होता है कि बच्चा यह जान ले कि अध्यापक की नजर उस पर और उसके साथियों पर है। मास्टरी यंत्र शिक्षाशास्त्रीय यंत्र है । आंख नियंत्रण और अनुशासन के लिए काम में ली जाती है जबकि आवाज दिशा निर्देश देने के लिए।

सभी अध्यापक शिक्षा देने के लिए इन मास्टरी यंत्रों का उपयोग करते हैं। लेकिन नागपाल व भारद्वाज के पढ़ाने में अक्सर गूढ़ ब्राह्मणवादी कर्मकांडों की जानकारी भी शामिल हो जाती है। इसमें सामान्य सांसारिक जानकारियां भी शामिल होती हैं । गावों के विभिन्न उत्सव या तथ्य जैसे कि कोयल का रंग या मोर के पंखों की खूबियां । यह सब कुछ उसी मास्टरी आवाज में बताया जाता है, जिसका अर्थ है कि बच्चों को यह भी जानना चाहिये । इसे यूं कहा जाए कि पाठ्यपुस्तक में न होते हुए भी कक्षा में दी जाने वाली जानकारियों में शामिल करने योग्य । (मैंने यह भी पाया कि छपे हुए को लिखे हुए से अधिक महत्व मिलता है ।) कोई भी बच्चा मास्टरी आवाज का इस्तेमाल नहीं कर सकता (मानीटर की भूमिका निभाते समय की बात अलग है ।) प्रदत्त प्रारूप की सीमाओ में बात करते हुए उन्हें इसकी छूट नहीं । इसी तरह पाठ्य पुस्तक से बाहर की जानकारियों में बच्चों की अपने अवलोकन शामिल करने की कोशिश भी गलत मानी जाएगी ।

2. उपेक्षा करना

इस तकनीक का उपयोग सभी अध्यापक करते हैं और इससे ऐसा आभास होता है कि बच्चा जो कुछ भी कह रहा है वह फालतू है या कि इसे बताने या कक्षा में इस जानकारी को शामिल करने का तो कम से कम कोई उपयोग नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं है कि बच्चा जो कह रहा है वह सच नहीं है या किसी रूप में वह गलत है। बच्चों को वक्तव्य के सही या गलत होने के बारे में टिप्पणी का अर्थ यह होगा कि कम से कम उनकी कही गई बात का इतना महत्व तो है कि उसे तवज्जो दी जाये और यही स्वत: उसे कक्षा में चल रहे विमर्श का हिस्सा बना देती है ।

3. नैतिक अनुशासन बनाए रखना

एक अन्य तरीका बच्चों द्वारा दी जाने वाली जानकारी को इस आधार पर खारिज कर देना है कि बच्चा बोलचाल की सामान्य तहजीब का भी ध्यान नहीं रख रहा है और वह गुस्ताखी कर रहा है ।

उदाहरण 5

भारद्वाज पूछता है : ''मरुस्थल के जानवर कौन-कौन से हैं?''

''....''

भारद्वाज विकास से जवाब देने को कहता है । वह थोड़ा सा सोच कर बताता है : ''ऊंट''

भारद्वाज : ''यह पानी को संचित कर लेता है।''

विपिन : (कक्षा का मॉनिटर) ''और वसा संचित होती है कूबड़ में ।''

अशोक : ''लोग ऊंट का दूध भी काम में लेते हैं ।''

भारद्वाज - ''बेवकूफ ।''

अशोक : ''गुरुजी आपने ही तो ऐसा बताया था ।''

भारद्वाज : ''मैंने ऐसा कहा था ? मैंने ऊंटनी के बारे में कहा होगा ।''

अशोक : ''जी अगर कहीं पर ऊंट है तो वहां ऊंटनियां तो होंगी ही ।''

अशोक : खड़े-खड़े पीठ के पीछे अपने रुमाल को घुमाते हुए आगे कहता है : ''और इसका चमड़ा चीजें बनाने के काम आता है ।'' पूरी कक्षा शांत है लेकिन वह स्वयं को रोक नहीं पाता और आगे से आगे चीजें जोड़ते हुए ऊंट के बारे में बताता जाता हैं

भारद्वाज (गुस्से में) : ''यह कक्षा है या खेल का मैदान ? तुम बहुत बोलते हो ।''

अशोक के बोलते समय भारद्वाज ने सुदृढ़ ढांचे को बनाए रखना अधिक उपयुक्त समझा । अशोक अपनी तरफ से बहस करते हुए अपने द्वारा बताई गई जानकारी की सत्यता साबित करने की कोशिश कर रहा था। पहले उसने बताया कि वह उसी तथ्य को दोहरा रहा है जो पूर्व में कभी भारद्वाज ने ही बताया था । उसके बाद उसने तर्क से अपनी बात साबित करनी चाही । इसके बाद उसने कई अन्य जानकारियां भी ऊंट के बारे में दी ताकि वह यह साबित

कर सके कि वह इस विषय के बारे में और भी बहुत कुछ जानता है और वह बिना संदर्भ के यूं ही तुक्के नहीं लगा रहा है । भारद्वाज ने अचानक उसके तर्क को खारिज करते हुए इस सारे संवाद को कक्षा के विमर्श से निकाल बाहर कर दिया और यह साबित कर दिया कि अशोक जो भी कह रहा था वह सब उसकी गुस्ताखी थी। इस तरह नैतिक अनुशासन बनाए रखने के नाम पर भारद्वाज ने सुदृढ़ ढांचे को अपना लिया ।

4. झूठ की लांछना का संकेत देना

भारद्वाज एक अन्य तरीका भी काम में लेता है जिसके सहारे वह बच्चों द्वारा प्रदत्त किसी जानकारी को चुनौती देता है या खारिज कर देता है । वह यह सिद्ध कर देता है कि यह जानकारी जो दी जा रही है उसका आधार ही गलत है । इसलिए इसे जानकारी के रूप में न लिया जाए ।

उदाहरण 6

मार्टिन लूथर किंग के बारे में पाठ शुरु किया गया ।

भारद्वाज : ''उसका एकमात्र अपराध उसका अश्वेत होना था।''

मनोज : ''रंग के आधार पर भेदभाव जी ।''

भारद्वाज : (मजाक उड़ाते हुए) : ''तुम तब पैदा भी हुए थे,तुम्हें क्या मालूम ?''

उदाहरण 7

भाषा की पुस्तक से दोहे पढ़ाए जा रहे थे । एक दोहे में एक शिव मंदिर में लिंग के ऊपर बंधे बर्तन का जिक्र आता है जिसमें से बूंद-बूंद पानी लिंग पर गिरता रहता है । सुरिन्दर, मनोज और अशोक सहमति से सर हिलाते हुए यह बताने के लिए कि वे इस बारे में और भी जानते हैं, हाथ उठाते हैं।

मनोज : ''जैसा अमरनाथ में है ।''

भारद्वाज (रुखेपन से) : ''तुम गए हो वहां ?''

मनोज (अपने बचाव में) : ''हां, जब मैं छोटा था तब गया था।''

भारद्वाज (अविश्वासपूर्वक) : ''वे बच्चों को वहां ले जाने नहीं देते।''

मनोज (विनम्रता से) ''नहीं जी (और भी अधिक विनय पूर्वक इतना धीमे कि सिर्फ ठीक उसके सामने बैठी मैं ही सुन पाई होऊंगी।) वह तो बहुत सुन्दर जगह है ।''

पहले उदाहरण में भारद्वाज मनोज की बात को इसलिए खारिज कर देता है कि वह पैदा ही नहीं हुआ था इसलिए इस बारे में जानकारी नहीं रख सकता । दूसरे उदाहरण में वह यह तो नहीं कहता कि यह जानकारी गलत है लेकिन मनोज का दावा उसे सच नहीं लगता । इन दोनों ही उदाहरणों में वह यह साबित करता है कि दी गई जानकारी उचित ज्ञानमीमांसात्मक प्रमाण पर आधारित नहीं है आगे चल कर इसमें झूठ का आभास होने लगता है । वह यह साबित करता हुआ प्रतीत होने लगता है कि यह न सिर्फ गलत मान्यताओं पर आधारित जानकारी दी जा रही है बल्कि बच्चा वास्तव में इस तरह की बातें झूठ-मूठ ही गढ़ कर बता रहा है ।

इस तरह हम देखते हैं कि अध्यापक कक्षा में सुदृढ़ ढांचा बरकरार रखते हैं । नागपाल और भारद्वाज की कक्षाओं में जरुरी जानकारी के नाम पर अध्यापक के नियंत्रण व अनुशासन के बावजूद बच्चे चल रही बातचीत में अपनी हिस्सेदारी निभाने की कोशिश करते दिखाई देते हैं। इसका अपने आप में महत्व है । यह भी महज एक संयोग नहीं है कि यह दोनों अध्यापक गांव में रहते हैं और स्कूल के अलावा भी बच्चों का इनसे संपर्क रहता है । इसके विपरीत दोनों अध्यापिकाएं पास के कस्बे में रहती हैं और वहां से आना जाना किया करती हैं ।

सीखना माने सही उत्तर जानना

सामान्यत: एक नया पाठ एक लम्बे सत्र में पूरा किया जाता है । इसमें पाठ को पढ़ना और उसे समझाने के लिए विश्लेषण करना शामिल होता है। इसके बाद प्रत्येक पाठ के साथ दिए गए प्रश्नों के

उतर दिए जाते हैं । पहले मौखिक रूप से और उसके बाद अध्यापक ब्लैक बोर्ड पर लिखता है जहां से बच्चा उन्हें कापी में उतार लेता है। पाठ इस निर्देश के साथ खत्म होता है कि अब इन्हें घर पर याद कर लेना । इसके बाद तीन चार बार सवाल-जवाब कर इनकी पुनरावृत्ति कर ली जाती है। पहली बार या आगे की पुनरावृत्तियों के दौरान भी प्राथमिक उद्देश्य इस बात के प्रति आश्वस्त होना प्रतीत होता है कि बच्चों ने अध्यापक द्वारा बताए गए पाठ्य पुस्तक आधारित जवाब ही याद किए हैं या नहीं ।

कृष्णा कुमारी - ''चिकने आंगन पर चलना क्यों मुश्किल होता है ?''

पंकज : ''क्योंकि जूते फिसल जाते हैं ।''

कृष्णाकुमारी : ''नहीं तुम्हारा जवाब किताब में से याद किया हुआ होना चाहिए ।''

सही जवाब पर जोर इस हद तक दिया जाता है कि शब्दों का क्रम भी वही बना रहना चाहिए । एक बार सुरिन्दर से पूछा गया, ''भारत कहां से कहां तक विस्तृत है ?'' उसने जवाब दिया ''अरुणाचल प्रदेश से कश्मीर तक ।'' इस पर अनेक बच्चों ने आपत्ति की कि सही जवाब 'कश्मीर से अरुणाचल प्रदेश' होना चाहिए । अध्यापक ने इसे सही आपत्ति माना । यहां तक कि बच्चे मानते हैं कि निबंध भी वही सही है जो गाइड में दिया गया है या कि अध्यापक ने लिखवाया है । वे उसे याद करते हैं और परीक्षा में पुन: प्रस्तुत कर देते हैं । वे इस बारे में बिल्कुल आश्वस्त रहते हैं कि उन्हें अपनी तरफ से कोई भी जानकारी जोड़ने का अधिकार नही हैं। शब्दों के सही क्रम में जवाब देने का दबाव इतना ज्यादा रहता है कि कई बार किसी-किसी शब्द पर बच्चा अटक जाता है या कई बार क्रम गड़बड़ा जाता है । और बच्चा बिल्कुल असहाय सा महसूस करने लगता है । उदाहरणार्थ : एक बार कृष्णा कुमारी ने पूछा - ''बाल गंगाधर तिलक ने क्या कहा था?'' बच्चों ने जो जवाब दिए वे इस प्रकार थे- ''भारत मेरा अधिकार है मैं इसे लेकर जाऊंगा ।'' ''स्वतंत्रता मेरा जनम है , स्वतंत्रता मेरा दिवस है ...'' ऐसे मौकों पर बच्चों का ध्यान इस तरफ नहीं दिलाया जाता कि वे जो बोल रहे हैं उसका अर्थ क्या है । उन्हें ठीक से याद करने के लिए कह दिया जाता है। और उनका ध्यान पाठ्यपुस्तक में दिए जवाब पर सीमित कर दिया जाता है ।

अध्यापक स्वयं भी यह स्वीकार करते हैं कि उनका दो तिहाई समय तो सवाल जवाब याद कराने में ही चला जाता है। यह देखने में कि बच्चों ने ठीक से याद किया है या नहीं । यह पुनरावृतियां उन बच्चों के लिए उपलब्धि बन जाती हैं जिन्हें सही क्रम याद रहता है । वे यह साबित कर पाते हैं कि वे जानते हैं । वे बाकी कक्षा और अध्यापक पर यह जता पाते हैं । वे इस पर गर्व कर पाते हैं कि वे ज्यादा जानते हैं । जो सही उत्तर नहीं दे पाते उनके लिए यह समय घोर तनाव और भय का होता है । कुछ अध्यापकों ने ऐसी तकनीक विकसित कर ली होती है जिससे उन बच्चों का पता लगाया जा सके जिन्होंने ठीक से याद नहीं किया है ।

सही गलत सवाल जवाब की पुनरावृति कराई जा रही है। एक बल दूसरे बल की दिशा बदल सकता है ।

नवीन - ''सही''

वह कक्षा के मॉनिटर से पूछती है । वह जवाब देता है 'गलत' । इसके बाद कक्षा के सब बच्चे वही जवाब देते हैं।

कृष्णा कुमारी : ''तुम सब भेड़ें हो । क्या एक बल दूसरे बल की दिशा नहीं बदल सकता ? तुम में से किसी ने भी सोच कर जवाब क्यों नही दिया ?''

कक्षा के मानिटर से पूछने के बाद बाकी लोगों से पूछने की तकनीक उसने विकसित की है क्योंकि अनेक बच्चे यह मानते हैं कि वह सही जवाब देगा इसलिए वे उसे ही दोहराते चले जाते हैं। यह सिर्फ जवाब नहीं जानने जितनी बात नहीं हैं । बच्चे को दोहरा शर्मिन्दा किया जाता है एक तो सवाल जवाब याद नहीं करने के आलसीपन के लिए और उससे भी ज्यादा अध्यापक से छुपाते हुए दूसरे की नकल की कोशिश करने के लिए ।

◆ ◆ ◆

इस तरह कक्षा पूर्णत: अध्यापक के नियंत्रण और अनुशासन में दिखाई देती है । यहां सब कुछ इतने तयशुदा ढांचे में बंधा होता है कि बच्चा स्कूल से बाहर की रोजमर्रा की किसी जानकारी को स्कूल में नही ला सकता । इसके विपरीत उनकी भाषा और जानकारी को पाठ्यक्रम तक ही सीमित रखने के लिए बाध्य किया जाता है। न सिर्फ बच्चों की याद की हुई चीजों बल्कि एक पढ़ने वाले के रूप में उसकी पहचान पर भी लगातार नजर रखी जाती है और बार बार की पुनरावृतियों के दौरान उसमें काट छांट की जाती रहती है ।

इस तरह स्कूल में दिया जाने वाला ज्ञान भी याद किया हुआ ज्ञान भर होता है । सीखने का अर्थ इस ज्ञान को याद करना और उसे याद है, यह अध्यापक पर प्रदर्शित करना भर है । ◆